

हमारा सूक्ष्म शरीर भी कार्य करता है...

जो कर्म हम करते जा रहे हैं, वे तमाम हमारे भीतर अवचेतन मन पर गहरी छाप छोड़ते हैं। चेतना में हो रही इसी प्रक्रिया से हमारा सूक्ष्म शरीर तैयार होता है और कई बार स्थूल शरीर से ज्यादा सूक्ष्म शरीर कार्य पूरा कर सकता है। हमने सुना है कि कई बार सूक्ष्म शरीर के द्वारा दूसरों को हील भी किया जाता है। ऐसी ही ऐसी ही कुछ घटनाओं का उल्लेख डॉ. थेलमा ने अपने संसोधन ग्रंथ में किया है।

न्यूयार्क के प्रोफेसर वैज्ञानिक डॉ. थेलमा मोस और डॉ. मार्गरेट आर्मस्ट्रॉन्ग ने उनके प्रयोग के द्वारा साबित किया कि व्यक्ति का सूक्ष्म शरीर उसके स्थूल शरीर से अलग हो सकता है और पल भर में हजारों माइल्स दूर जा सकता है। डॉ. थेलमा मोस ने उनके संशोधन ग्रंथ में ऐसी अनेक घटनाओं का उल्लेख किया है। उनमें से एक घटना 1908 में हुई थी। ब्रिटेन के



- ब्र.कु.गंगाधर

‘हाउस ऑफ लॉर्ड्स’ का अधिवेशन चल रहा था। इस अधिवेशन में विरोधी-पक्ष ने सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव रखा था और उस दिन प्रस्ताव पर मतदान होने वाला था। विरोधी-पक्ष मजबूत था इसलिए सरकार को बचाने के लिए सत्ता-पक्ष के सभी सांसदों का उस अधिवेशन में हाज़िर होना बहुत ज़रूरी था। लेकिन सत्ता-पक्ष के सदस्य सर कोर्नराश गंभीर बीमारी से ग्रस्त थे। उनकी स्थिति ऐसी नहीं थी कि वे चल-फिर सकें। सबकी ऐसी इच्छा थी कि सर कोर्नराश अधिवेशन में हाज़िर होकर मतदान करें। इसलिए उन्होंने डॉक्टरों से विनती की कि उन्हें मतदान के लिए सदन में जाने दिया जाए।

सूक्ष्म शरीर से मीलों दूर के भी दुःखी आत्माओं की आवाज़ सुन सकते हैं व उन्हें विकट परिस्थितियों से मुक्ति भी दिला सकते हैं। ये तब संभव होता है जब निरंतर हमारी चेतना की सूक्ष्म शक्तियों को उस दिशा में एकाग्र करने का अभ्यास हो व सूक्ष्म शक्ति मन-बुद्धि, कल्याण व श्रेष्ठ कार्य के प्रति सजग रहती। सत्य स्वरूप में स्थित होने पर रूह को राहत पहुंचती।

लेकिन रोग की गम्भीरता के कारण डॉक्टर भी लाचार थे और वे उनके जीवन को खतरे में डालने को तैयार नहीं थे। दूसरी ओर सदन में मतदान के समय अनेक सदस्यों ने देखा कि सर कोर्नराश अपनी कुर्सी पर बैठे हैं और उन्होंने मतदान भी किया। कई सदस्यों ने उनके स्वास्थ्य के संबंध में हालचाल पूछे और पक्ष के हित में मतदान करने के बाद धन्यवाद दिया। फिर थोड़े दिनों के बाद सर कोर्नराश ने अधिवेशन में न पहुंच सकने व अपनी असमर्थता के कारण माफी मांगी तो सभी को आश्चर्य हुआ। उन्होंने कोर्नराश से कहा कि आप तो मतदान करने आये थे न! सभी ने आपको देखा था, आपके साथ बात भी की थी और आपका मत पार्टी के लिए निर्णायक साबित हुआ था। जबकि कोर्नराश को डॉक्टरों ने बताया कि आप तो बेड से उठे भी नहीं थे क्योंकि आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। डॉक्टरों की निगरानी में ही उनका देख-भाल किया जा रहा था। इसलिए कोई भी उन्हें सदन में ले गया हो ऐसा तो हो ही नहीं सकता। डॉ. थेलमा मोस बताते हैं कि सर कोर्नराश का स्थूल शरीर तो बेड पर ही था लेकिन उनका सूक्ष्म शरीर मतदान के स्थान पर पहुँच गया था। चेतना (सूक्ष्म शरीर) ने स्थूल शरीर जैसा रूप धारण कर मतदान के महत्वपूर्ण कार्य को पूरा किया।

डॉ. थेलमा मोस ने ऐसे कई घटनाओं का उल्लेख किया है। एक बार ब्रिटिश कोलंबिया विधान सभा का अधिवेशन चल रहा था। उस समय उनके एक सभा सदस्य चार्ल्स वुड बहुत बीमार थे। उनकी तीव्र इच्छा थी कि वे अधिवेशन में हाज़िर रहें। लेकिन डाक्टरों ने स्पष्ट रूप से मना कर दिया कि आपके लिए बेड से उठना बहुत ही नुकसानकारक होगा क्योंकि आपकी बीमारी बहुत गम्भीर है। इसलिए आपको बेड से उठने की इजाजत नहीं दे सकते। चार्ल्स वुड सगे-सम्बंधियों, डॉक्टरों एवं नर्स -शेष पेज 11 पर..

जो मेरे अंदर में होगा वह बाहर एक्ट में जरूर आएगा

हर समय सुबह शाम, रात्रि को सोने के समय भी दिन-रात मैं आत्मा हूँ, यह स्मृति रहे तो ऑटोमेटिक बाबा की याद रहती है क्योंकि परमात्मा ने बताया है कि तुम आत्मा मेरा बच्चा हो, वारिस हो। तो यह स्मृति और अटेन्शन रखने से कार्य-व्यवहार होते हुए भी किसकी कमी कमजोरी न देखें, न सुनें, यह परहेज चाहिए क्योंकि यज्ञ सेवा में हर एक निमित्त है, हर एक का पार्ट अपना है। मुझे धुन लगी पड़ी है, अन्दर की मेरी स्थिति में कोई कमी-कमजोरी न रहे, अचल-अडोल स्थिति बनें। जैसे बाबा को यह भान है कि यह सब मेरे बच्चे हैं, ऐसे हमको यह भान हो कि मैं आत्मा हूँ, बाबा की हूँ तो सर्वशक्तिवान बाबा से शक्ति आती है। वो शक्ति फिर मुझे हर समय साथ देती है तब कहते हैं, इस रूप में बाबा हमारे साथ है, कम्बाइण्ड है। जब सर्वशक्तिवान का साथ है तो जीवन यात्रा में कोई बात रोक नहीं सकती। जीवन यात्रा में मैं कभी रूकती नहीं हूँ। रूकने से, देखने से, सुनने से, सोचने से जो टाइम वेस्ट होता है ना, उसका दुःख होता है। बात का दुःख नहीं होता है, लेकिन अधिक सोचने से, फीलिंग में आने से जो टाइम वेस्ट हुआ उसका दुःख हुआ। बातें तो हमारे सामने भी आती होगी ना! पर मैं अपने को दुःखी नहीं करती हूँ। अगर मैंने दुःख महसूस किया तो मैं भी वही दूँगी, मानो न मानो। जो मेरे अन्दर में होगा वह बाहर में जरूर एक्ट में आयेगा। चेहरे पर भी आयेगा, दुःख लिया है या दुःखी हुए तो दूसरों को दुःख ही देंगे। फिर दुःख देने और

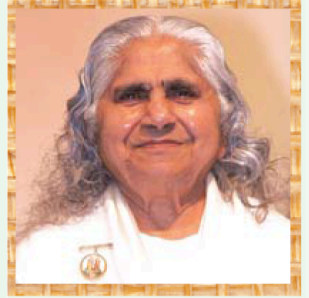
लेने वालों को भूलना ही मुश्किल हो जाता है फिर कोई और दुःख आता है तो इसमें फिर दोनों का टाइम वेस्ट होता है-इससे बचाओ अपने को। सेवाओं में भिन्न-भिन्न सीन सामने आयेंगी, फिर भी अगर कोई याद में रहने का पुरुषार्थ करते हैं तो बाबा सामने आता है और साथ देता है। बातों की सोंच में थोड़ा भी समय गया, तो यह जो पुरुषार्थ की लगन है, वो लगन की अग्नि न पैदा होती है, न काम करती है इसलिए साइलेंस चाहिए। साइलेंस में मज़ा तब आता है जब अन्तर्मुखी हैं।

जिस घड़ी जो बात सुना रहा है, उसी घड़ी उसे स्वरूप में लाने की लगन हो तो लिखने का टाइम ही नहीं होगा, मिस कुछ नहीं होगा। आप एक शब्द लिखेंगे, दूसरा मिस होगा, लिखने में बुद्धि चली गयी, यानि इतना बाबा के एक-एक महावाक्यों का कदर करो, ध्यान रखो तो बाबा ने जिस समय पुरुषार्थ को तीव्र करने की जो विधियाँ सिखाई हैं वो स्वरूप में आ जायेंगी। तो मुरली में जादू है हमारी जीवन यात्रा में कदम कदम पर वाह गुरु वाह! फिर बाप भी है, शिक्षक भी है। बाबा सुबह से लेके रात तक पुरुषार्थ की एक ही बात के गहराई में लेके जाता था इसलिए वो पक्का हो जाता था।

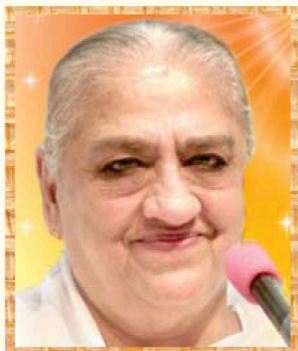
बेदागी हीरा बनना है तो दिल साफ रखो, तो हीरो एक्टर हीरे मिसल जीवन हो जायेगी। हर एक कहे, आपस में फीलिंग आये कि इसकी दिल साफ है, सच्ची है। सबको मेरे से यह फीलिंग है? दिल साफ और सच्ची है। सफेद कपड़ों में कही थोड़ा भी दाग लगे तो वो

शोभता नहीं है क्योंकि वो िद ख।। ई पड़ता है। दिल साफ नहीं है, तो मन शान्त नहीं रह सकता, कनेक्शन नहीं जुड़ता है तो फिर मन से मनमनाभव-मध्याजीभव नहीं हो सकते हैं। मन शान्त है तो बुद्धि राइट काम करती है। बुद्धि कभी कोई व्यर्थ में गई माना दिल में कोई बात लगी है, मन अशान्त हुआ है तो बुद्धि स्थिर नहीं हो सकती है, ना ही अन्तर्मुखी हो सकते हैं। पहले दिल मन ठीक है तो बुद्धि से योग लगे। याद दिल से करना है, योग बुद्धि से लगाना है। मेरी वृत्ति से ऐसी भासना आवे जो उसकी वृत्ति भी साफ हो जावे इसको कहा जाता है संग का रंग। कोई बात याद आती है तो मदद मिलती है और कोई बात याद आती है तो नुकसान करती है, तो यह भी अक्ल चाहिए ना।

सम्पन्न बनना है तो कैसा बनना है, जब तक वो लगन नहीं है तो लगेगा समथिंग मीसिंग है। कुछ मिस है मेरे से...ऐसी चितवना चाहिए, चिंता नहीं। घड़ी-घड़ी यह ख्याल आवे क्या मिस है मेरे से...वो अभी अगर मेरा खत्म होगा तो वाह बाबा वाह! शुक्रिया बाबा आपका। इसके लिए कोई भी बात है चलायमान, डोलायमान नहीं होंगे, भगवान की मेहरबानी है। अचल-अडोल रहेंगे व दूसरों को बनाएंगे।



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका



दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

बाबा ने आप युगलों को कौन से ताख़्त पर बिठाया है? विश्व वें ज़िम्मेवारी का तख़्त दिया है। बोलो, आप सभी बड़े उमंग और उत्साह से आये हैं ना! और विश्व में आवाज़ फैलायेंगे कि हम ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ विश्व परिवर्तन का कार्य कर रहे हैं। आपको कोई भी देखेगा तो कहेगा कि यह तो युगल रूप में रहते अपने नियम-संयम निभा रहे हैं। तो वो देखके सुनके ही परेशान होगा कि यह कैसे हो सकता है! लेकिन बाबा ने आपको कितना सहज युगल होते हुए भी अपने स्वधर्म में स्थित होने का मार्ग बताया है। बाबा ने आपको विश्व के आगे असम्भव को सम्भव कर दिखाने का गोल्डन चांस दिया है, उसको देख करके बाबा भी बहुत खुश हो रहा है। आप एक-एक को बाबा देख रहा है।

बाबा ने आपका मर्तबा कितना ऊँचा बनाया है। जो सन्यासी नहीं कर सके वो आप करके दिखा रहे हो। बोलो, बाबा की आज्ञा, श्रीमत, डायरेक्शन पर चलना सहज है या मुश्किल है? सहज है ना! बाबा की याद में जो परीक्षा देकर पास हुए हो, बाबा ने युगलों को

विजय का तिलक सदा हमारे मस्तक पर लगा हुआ है

देखकर कहा यह तो मेरा एक एक बच्चा विश्व के अन्दर नाम बाला करने वाला महान से महान है। बोलो, ऐसे महान हो ना!

आपको सहज लगता है ना! आपको देखकर बाबा भी कहता वाह मेरे बच्चे वाह! आप भी कह रहे हो वाह बाबा वाह! तो खुशी की बात है कि आज मधुबन में कितना अच्छा आप सब का संगठन हुआ है। बाबा ने आपको कितनी ताकत दी है। अरे, आत्मा रूप में स्थित हो जाओ तो मुश्किल नहीं लगता है। बाबा ने इतना महावीर बनाया है जो ऐसा पवित्र जीवन बिताना कोई बड़ी बात नहीं है। आप सबको बड़ी बात लगती है या कॉमन बात लगती है? कमलपुष्प समान न्यारे और प्यारे हो ना! मधुबन अपने घर में आकर आप सबको इतनी खुशी हो रही है ना! मधुबन में जो भी ग्रुप आता है वो भरपूर होके जाता है, आप भी भरपूर होके जायेंगे।

अभी बाबा के पास आकर विशेष क्या पुरुषार्थ किया? पुरुषार्थ यही विशेष करो कि हमको पास विद ऑनर होना है। पास होना तो कॉमन है। उसके लिए बस अपने को श्रेष्ठ आत्मा हूँ, बाबा का साथी हूँ, बाबा मेरे साथ है - इसको नहीं भूलो। बाबा को अपने दिल में बिठा दिया है ना। कभी निकल तो नहीं जाता है? माया ऐसी है जो बीच-बीच में डिस्टर्ब

करती है। भले करने दो, वो अपना काम करती है, हम अपना काम करेंगे। हम बाबा के साथ हैं, साथ रहेंगे, सदा के लिए ब्रह्मा बाबा के साथ, मम्मा के साथ विभिन्न रूप में रहेंगे। कितना सुन्दर राज्य होगा अपना! रास खेलेंगे ना, यहाँ रास की?

जब दिल में बाबा बैठा है, तो दिल कितनी नजदीक है, नजदीक वाले को जल्दी बुला सकते हैं। बाबा का साथ है, मधुबन का स्थान है और विजय तो आपके तकदीर में है ही है। आप सबके मस्तक में विजय का तिलक लगा हुआ है। अभी बाबा कहते हैं कि हरेक को क्या याद रखना है? मुझे बाबा का साथी बन इस दुनिया को परिवर्तन कर अपना राज्य स्थापन करना है। अभी तो देखो क्या लगा पड़ा है? बाबा कुछ समय से कहते हैं कि अचानक, अचानक कुछ भी हो सकता है। तो अचानक क्या से क्या हो जाता है, वह समाचार तो आपने सुना ही। लेकिन हम बाबा के साथ बहुत सेफ हैं। मधुबन में आकर तो आप बहुत आराम करते होंगे, जो वहाँ (अपने लौकिक स्थान पर) नहीं कर सकते हैं। लेकिन बाबा की याद से वहाँ भी आराम में रहते, खुशी में रहते बाबा के साथ हो। सारे दिन में आप नोट करो कि कितना समय याद में रहे, तो यह याद का अभ्यास आगे चलकर बहुत काम आयेगा